सामाजिक सद्भाव के तत्व

सामाजिक सद्भाव की सामग्री हैं –

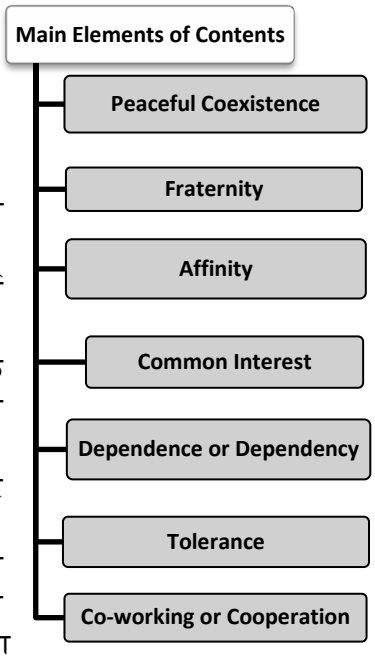

- **शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व:** यह सामाजिक सद्भाव का एक महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि सद्भाव संघर्ष के सिद्धांत पर आधारित नहीं है, हितों और आकांक्षाओं का कोई संघर्ष नहीं है। यह सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक विरोध के अलावा सह-अस्तित्व और परस्पर निर्भरता की अवधारणा है। सामाजिक समरसता पहचान का सवाल नहीं है, न ही यह कोई अलग अस्तित्व है, यह एक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व है।
- **भ्रातृत्व:** सामाजिक सद्भाव एक भावनात्मक अवधारणा है, जिसका एक महत्वपूर्ण घटक भ्रातृत्व की भावना है।
- **आत्मीयता:** सद्भाव का एक घटक आत्मीयता है। अपनत्व से समाज में अपनेपन और स्नेहपूर्ण संबंधों का विकास होता है, जिससे समाज में समरसता स्थापित होती है।
- **सामान्य हित:** यह भी सद्भाव का एक महत्वपूर्ण घटक है। समरसता के लिए यह आवश्यक है कि लोग सामान्य हित की बात करें न कि स्वार्थ की। सामाजिक समरसता की मूल भावना सर्वहित पर निर्भर करती है।
- **निर्भरता या निर्भरता:** समाज के सभी लोग किसी न किसी काम के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। लोगों के बीच अन्योन्याश्रय या निर्भरता ने समाज में सद्भाव स्थापित किया।
- **सहिष्णुता:** सद्भाव का एक प्रमुख घटक सहिष्णुता है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि समाज की सभी मान्यताओं, संस्कृतियों और धर्मों के अस्तित्व को स्वीकार करना और उनका सम्मान करना सहिष्णुता है। अतः सामाजिक समरसता बढ़ाने के लिए सहिष्णुता की अवधारणा का होना आवश्यक है।
- **सहकार्य या सहयोगः** यह भी सामाजिक समरसता का एक महत्वपूर्ण घटक है। सहयोग एक साथ काम करने और काम को समझने की भावना है। अतः एक साथ कार्य करने या सहयोग करने से समाज में समरसता स्थापित होती है।

प्राचीन और पारंपरिक तत्व

- **कला:** कला सामाजिक सद्भाव का एक महत्वपूर्ण घटक है। कला में जाति-वर्ग के भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है, इसलिए यह सामाजिक गुणवत्ता का प्रतीक है। कला संस्कृति का वाहन है। इसलिए कला हमारे सामाजिक समरसता को बनाए रखती है। सामाजिक प्रथाओं, अस्पृश्यता, भेदभाव और अभावों का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करके, कला लोगों के दिलों में बदलाव लाकर और अंतर-समूह संपर्क बढ़ाकर सद्भाव को प्रोत्साहित करती है।
- **परिवार:** परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। किसी व्यक्ति पर सबसे पहले उसके परिवार का प्रभाव पड़ता है। परिवार द्वारा बच्चों को शुरू से ही अच्छे संस्कारों की शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि उनमें समाज और देश के प्रति सद्भावना का विकास हो। भारत में अनेक स्थानों पर संयुक्त परिवार प्रणाली अभी भी प्रचलित है। संयुक्त परिवार प्रणाली के माध्यम से हम आपसी समन्वय, एकता आदि गुणों को आत्मसात कर सकते हैं, जो बाद में सामाजिक समरसता बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- **सांस्कृतिक महोत्सव:** भारत विविधता का देश है। यहां विभिन्न धर्मों के त्योहार जैसे होली, छठ पर्व, दिवाली, रक्षाबंधन, ईद, क्रिसमस आदि एक साथ मनाए जाते हैं। ये पर्व सामाजिक समरसता का संदेश देते हैं।
- **धार्मिक ग्रंथ:** ये भी सामाजिक समरसता के महत्वपूर्ण घटक हैं। विभिन्न प्रकार के धार्मिक ग्रंथ जैसे वेद, पुराण, कुरान, बाइबिल आदि मनुष्य को एक दूसरे से प्रेम करना सिखाते हैं। इस प्रकार ये धार्मिक ग्रंथ सामाजिक समरसता का संदेश देते हैं।

- जजमानी व्यवस्था

आधुनिक काल के तत्व

- **संविधान:** सामाजिक न्याय और समानता संविधान के माध्यम से ही संभव है। यह समाज में सामाजिक न्याय और गुणवत्ता प्रदान करता है और एक प्रगतिशील समाज की नींव रखता है। भारत के संविधान में निहित सामाजिक दर्शन समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए सामाजिक-आर्थिक न्याय की नींव रखता है। संविधान में कई ऐसे प्रावधान किए गए हैं, जो सामाजिक समरसता बनाए रखने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, संविधान का अनुच्छेद 14 ,अनुच्छेद 15 आदि । इस तरह, संविधान समानता के मौलिक अधिकार के माध्यम से सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है। और भाईचारे को बढ़ावा देने का मौलिक कर्तव्य।

- **सरकार:** सरकार कुछ खास लोगों का एक समूह है जो एक निश्चित अवधि के लिए और एक निश्चित प्रणाली द्वारा राष्ट्र और राज्यों पर शासन करते हैं। सामान्यतः इसके तीन भाग होते हैं - विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। सामाजिक समरसता बनाए रखने में इनकी अहम भूमिका होती है। सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। उदाहरण के लिए निम्न वर्ग और महिलाओं को सम्मान देने के लिए सरकार उन्हें आरक्षण प्रदान कर प्रगति की ओर अग्रसर कर रही है।
- **मीडिया:** मीडिया सामाजिक समरसता का पोषक और निर्माता है। सामाजिक समरसता में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो किसी भी व्यक्ति के साथ भेदभाव का विरोध करता है और सच्चाई को जनता के सामने प्रकट करता है। समाज की विचारधारा मीडिया से प्रभावित होती है, इसलिए उसकी प्रस्तुति समाज और देश के सकारात्मक तत्वों की ओर होनी चाहिए। नकारात्मक तत्वों के कारण समाज में भेदभाव, हिंसा, घृणा, भय, प्रतिस्पर्धा एवं दुर्भावना जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए मीडिया को भारत के सामाजिक समरसता को ध्यान में रखना चाहिए। मीडिया को समाज में वैमनस्य और जातिगत भेदभाव फैलाने वाले असामाजिक तत्वों को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए बल्कि सामाजिक सद्भाव और एकता को बढ़ावा देने वाले लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए। सोशल मीडिया का उपयोग सकारात्मक दिशा में करना चाहिए क्योंकि यह एक ऐसा मंच है जो लोगों को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। इसलिए, सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने में मीडिया और सोशल मीडिया महत्वपूर्ण कारक हैं।
- **शिक्षा:** सामाजिक समरसता बनाए रखने के लिए शिक्षा एक आवश्यक तत्व है। जब समाज के सभी लोग शिक्षित होंगे तो आपसी सौहार्द और भाईचारे से सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलेगा।

सामाजिक सद्भाव के उद्देश्य, विशेषताएँ और महत्व

सामाजिक सद्भाव के उद्देश्य

अपने मूल स्वरूप में यह एक रचनात्मक अवधारणा है, जिसके मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं-

- राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए।
- जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता को समाप्त करके लोगों के बीच आपसी प्रेम और सद्भाव को बढ़ावा देना।
- समाज की सभी जातियों और वर्गों के बीच एकता स्थापित करना।
- जाति, धर्म और राजनीति से परे राष्ट्र के गौरव को बनाए रखना।
- कमियों को दूर करने के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करना।
- बंधुत्व, प्रेम और सद्भाव को बढ़ाकर राष्ट्र की प्रगति में सहयोग करना।
- राष्ट्र की एकता और अखंडता को विघटनकारी बाहरी और आंतरिक ताकतों से बचाना।
- विकास को बढ़ावा देना।
- वैज्ञानिक शोधन और सामाजिक-सांस्कृतिक विकृतियों का प्रतिकार करना।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

सामाजिक सद्भाव की आवश्यकता और महत्व

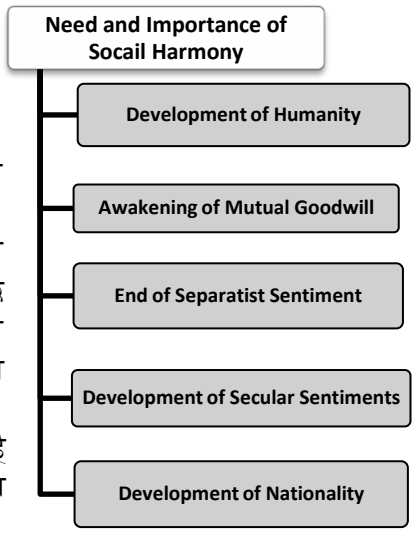

1. **मानवता का विकास** : सामाजिक समरसता की भावना का सबसे बड़ा महत्व यह है कि यह मानव प्रेम की भावना को बढ़ाते हुए मानवता का विकास करती है। इंसान चाहे किसी भी देश का हो, किसी भी धर्म को मानता हो, कोई भी भाषा बोलता हो, वह सबसे पहले इंसान है और उसके लिए उसकी भावनाओं का सम्मान होना चाहिए। इससे वैश्विक-अपनापन और राष्ट्रीयता की भावना विकसित होती है और यह भावना विश्व शांति बनाए रखने में सहायक होगी।
2. **पारस्परिक सद्भावना की जागृति** – सद्भावना के कारण ही मनुष्य में परस्पर सद्भावना जागृत हो सकती है। यह तभी संभव है जब सभी लोग एकजुट होकर एक दूसरे को अच्छे व्यवहार के लिए प्रेरित करते रहें। जाति और वर्ग भेद की भावना को मिटाकर ही ऐसी प्रवृत्ति को अपनाया जा सकता है। सामाजिक समरसता से ही व्यक्ति परस्पर एकता को अपना सकते हैं।
3. **अलगाववादी भावना का अंत:** जिस देश में वर्ग भेद और अलगाववादी भावना बढ़ती है वहां नागरिकों के बीच सामाजिक संबंध भी बिगड़ते हैं और देश टूटने लगता है। इस

बिखराव को रोकने के लिए हमें पहले चरित्र का निर्माण करना होगा। जिसके लिए सामाजिक समरसता की शिक्षा अवश्य देनी चाहिए, क्योंकि इसके बिना व्यक्ति में स्वार्थ की भावना बढ़ने लगती है। अतः इन सब को समाप्त करने का एक ही आधार है कि सभी व्यक्तियों के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए एक होने की शिक्षा दी जानी चाहिए।
इससे व्यक्तियों की अलगाववादी भावना समाप्त होगी और व्यक्ति सामाजिक समरसता के महत्व को समझ पाएगा।

4. **धर्मनिरपेक्ष भावनाओं का विकास**
5. **राष्ट्रीयता का विकास**

सामाजिक सद्भाव की बाधाएं

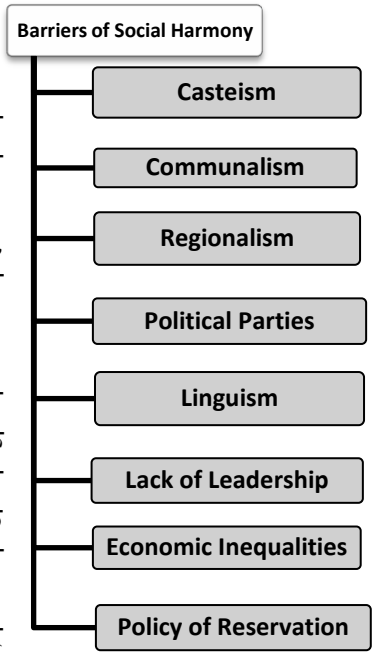

- **जातिवाद:** जातिवाद भारत के सामाजिक सद्भाव के रास्ते में एक बड़ी बाधा है। यहां के निवासी विभिन्न धर्मों और जातियों को मानते हैं, जिसके कारण इन सभी में आपसी मतभेद पाए जाते हैं। प्रत्येक जाति या धर्म का व्यक्ति अपने को दूसरे धर्म या जाति के व्यक्ति से श्रेष्ठ मानता है। इससे प्रत्येक व्यक्ति में एक दूसरे के प्रति अलगाव की भावना ने इतना गंभीर रूप धारण कर लिया है कि वे इस संकीर्ण भावना को त्याग कर राष्ट्रीय समरसता के हित में व्यापक दृष्टिकोण अपनाने में असमर्थ हैं।
- **साम्प्रदायिकता:** हमारे देश में अनेक धर्मों और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि। नफरत की आँखों से संप्रदाय। भारत में सभी संप्रदाय राष्ट्रीय हितों के बजाय अपने-अपने सांप्रदायिक हितों को पूरा करने में लगे हुए हैं। इससे देश की सामाजिक समरसता खतरे में पड़ गई है।
- **क्षेत्रवाद:** क्षेत्रवाद से हमारा तात्पर्य है- अपने क्षेत्र के प्रति गर्व और निष्ठा की भावना रखना। इस प्रकार, क्षेत्रवाद भूमि के एक विशेष क्षेत्र को संदर्भित करता है, जहां के निवासियों में भाषा, संस्कृति और आर्थिक हितों की एकता की भावना होती है। इस प्रकार, क्षेत्रवाद दूसरे क्षेत्र के लोगों के प्रति एक नकारात्मक भावना है। यह नकारात्मक भावना अपने क्षेत्र की स्वायत्तता के बारे में है। इस कर; प्रत्येक क्षेत्र अपनी स्वायत्तता की मांग करता है।
- स्वायत्तता चाहने वाले राज्यों में लोग स्वायत्तता के लिए आन्दोलन और विरोध कर रहे हैं। वे अपनी जमीन के लिए मर मिटने को तैयार हैं। इस प्रकार की क्षेत्रीय निष्ठा वास्तव में सामाजिक समरसता के लिए खतरनाक है।
- **राजनीतिक दल:** जाति और धर्म के आधार पर गठित राजनीतिक दल; सबसे ज्यादा भेदभाव और सांप्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं। ये दल जाति, धर्म, संप्रदाय और क्षेत्र के आधार पर लोगों से वोट मांगते हैं और राष्ट्रीय हित के बजाय राष्ट्रीय विघटन के कार्यों में शामिल होते हैं। इससे सामाजिक समरसता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **भाषावाद:** भाषा के नाम पर असम, पंजाब, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु आदि राज्यों में अनेक घिनौनी घटनाएं हुई हैं और यह समस्या आज भी देश में विद्यमान है। इसलिए सामाजिक समरसता के लिए भाषाई विवाद को समाप्त कर एक ही भाषा को पूरे राष्ट्र के लिए स्वीकार किया जाना चाहिए।
- **नेतृत्व की कमी:** हमारे देश में उच्च स्तरीय नेतृत्व मौजूद है लेकिन स्थानीय स्तर पर इसकी कमी है। प्राय: देखा जाता है कि स्थानीय नेता अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए जातिवाद, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद आदि अवांछनीय भावनाओं को भड़काते हैं।
- **आर्थिक असमानताएँ:** आर्थिक असमानताओं के परिणामस्वरूप सामाजिक समरसता के विरुद्ध वातावरण उत्पन्न होता है। यह आर्थिक असमानता विभिन्न वर्गों, क्षेत्रों और एक ही क्षेत्र के विभिन्न भागों में देखी जाती है। निर्धन वर्ग कठिन परिश्रम के बाद भी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता है, जिसके कारण उसके मन में धनवानों के प्रति घृणा एवं ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होती है। आर्थिक असमानता वर्ग संघर्ष को जन्म देती है। यह सब सामाजिक समरसता को प्रभावित करता है।
- **आरक्षण की नीति:** आरक्षण की नीति के कारण विभिन्न जातियों के बीच घृणा की भावना उत्पन्न होती है, जो सामाजिक समरसता के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है।

सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के उपाय

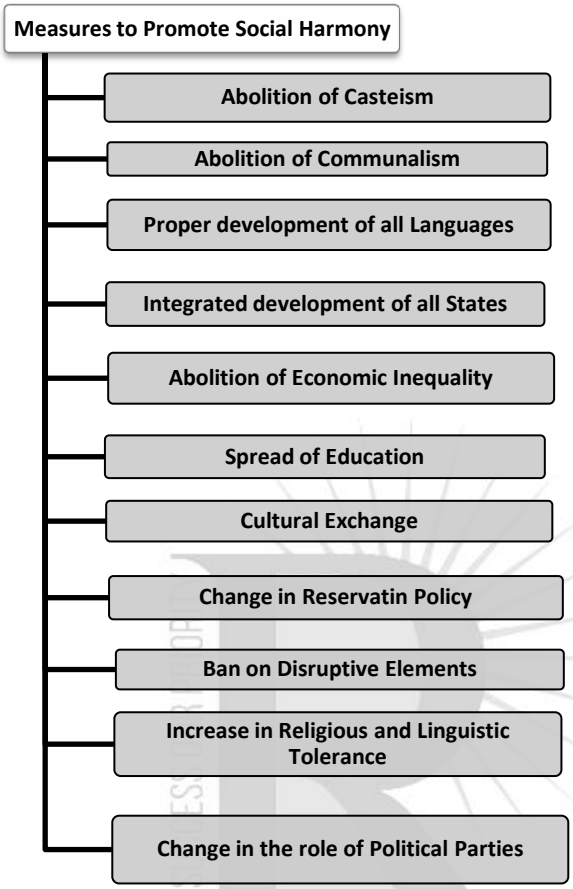

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)